E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

राजीव शर्मा के कथा साहित्य में शिल्प विधान की प्रासंगिकता

शोध प्रपत्र

महाराज सिंह धाकड़

शोधार्थी

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्योपुर (म.प्र.)

डॉ. मुक्ता अग्रवाल

शोध निर्देशक.

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Received date

05/05/2026

Publishing Date

10/05/2026

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.21208187

IMPACT FACTOR 5.924

साहित्य में शिल्प विधान का अर्थ है- किसी साहित्य के सृजन या रचने या गढ़ने की विधि, प्रक्रिया और कलात्मक कौशल। इसमें शब्दों का चयन और संयोजन, अलंकार, छंद, रस, बिम्ब, प्रतीक, मुहावरे, लोकोक्ति आदि संरचनाओं का प्रयोग करके किसी रचना को रोचक, आकर्षक और सजीव बनाने की कला शामिल होती है। 'शिल्प' स्वयं किसी कार्य को करने के कौशल और तकनीक को दर्शाता है, जबकि 'विधान' किसी कार्य को करने की विधि या प्रक्रिया है। अतः षिल्प विधान का अर्थ साहित्य या कला में किसी रचना को आकार देने की कलात्मक तकनीकी है।

राजीव शर्मा की रचनाएँ मौलिक एवं लोकप्रिय हैं, जो उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को दर्शाती हैं। उन्होंने हमेषा स्वमंगल से सर्वमंगल करने का प्रयास किया है। उनकी रचनाओं में, कविताएँ, ग़ज़ल, गीत, षेर और उपन्यास हैं। वे प्रकृति, प्रेम और सौंदर्य के कवि हैं। अधिकतर उनकी कविताओं में जीवन का प्रयोजन, गहनता एवं स्पश्टता से दिखलाई पड़ता है। राजीव शर्मा के साहित्य में सामाजिक सरोकार एवं सोच को उचित स्थान मिला है। उन्होंने जीवन के पुरूषार्थ को सत्य और कौशल माना है, जिसमें जीवन की सहजता स्पष्ट दिखलाई पड़ती है। राजीव शर्मा का लेखन, साहित्य एवं शिल्प विधान की दृष्टि से धनी है, जिसमें शिल्प के सभी कारक, घटक एवं आयाम पाये जाते हैं।

भाषा–

भाषा मनुष्य के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण साधन है, जिसके माध्यम से वह अपने विचारों, भावनाओं, इच्छाओं और अनुभवों को दूसरों तक पहुँचाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहकर उसे दूसरों से संवाद करना पड़ता है। यह संवाद भाषा के माध्यम से ही संभव होता है। यदि भाषा न होती, तो मनुष्य अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं कर पाता और समाज का विकास भी संभव नहीं होता। इसलिए भाषा को मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास का मूल आधार माना जाता है। अतः कहा जा सकता है कि भाषा मनुष्य के जीवन का अत्यंत आवश्यक और महत्त्वपूर्ण साधन है। इसके बिना समाज, संस्कृति और ज्ञान का विकास संभव नहीं है। भाषा ही वह माध्यम है जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग बनाती है। इसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को व्यक्त करता है, ज्ञान प्राप्त करता है और समाज में संबंध स्थापित करता है। इसलिए भाषा को मानव सभ्यता और संस्कृति की आधारशिला माना जाता है।

राजीव शर्मा ने उपन्यास एवं काव्य संग्रह दोनों ही लिखे हैं और दोनों ही विधाओं की भाषा शैली में पर्याप्त भिन्नता है। उपन्यास साहित्य की ऐसी विधा है जिसमें भाषा का महत्व अत्यंत केंद्रीय होता है। भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा लेखक अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों और सामाजिक यथार्थ को पाठकों तक पहुँचाता है। किसी भी उपन्यासकार की पहचान उसकी विशिष्ट भाषा–शैली से बनती है। समकालीन हिंदी साहित्य में राजीव शर्मा ऐसे उपन्यासकार माने जाते हैं जिनकी भाषा सरल, सजीव और प्रभावपूर्ण है। उनके उपन्यासों में प्रयुक्त भाषा न केवल कथानक को आगे बढ़ाती है बल्कि पात्रों के स्वभाव, सामाजिक परिवेश और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को भी स्पष्ट करती है।

उनके उपन्यासों की भाषा का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि वे भाषा को केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं मानते, बल्कि उसे विचार और संवेदना की संरचना के रूप में प्रयोग करते हैं। उनकी भाषा में सहजता, संवादधर्मिता, यथार्थपरकता और भावात्मक गहराई दिखाई देती है। उनके उपन्यासों की भाशा की कुछ प्रमुख विषेशताएँ इस प्रकार हैं –

सरल और सहज भाषा–

राजीव शर्मा के उपन्यासों की सबसे प्रमुख विशेषता उनकी भाषा की सरलता है। वे कठिन और जटिल शब्दों की बजाय सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हैं। इससे उनके उपन्यास सामान्य पाठकों के लिए भी सहज रूप से समझ में आने वाले बन जाते हैं। उनकी भाषा में अनावश्यक अलंकारिकता नहीं होती। वे सीधे और स्पष्ट वाक्यों के माध्यम से अपनी बात कहते हैं। उदाहरण के रूप में जब वे किसी ग्रामीण जीवन या सामाजिक परिस्थिति का वर्णन करते हैं तो भाषा बिल्कुल सहज और स्वाभाविक लगती है। इस सरलता के कारण पाठक कथानक के साथ आसानी से जुड़ जाता है और उसे पढ़ते समय किसी प्रकार की भाषाई कठिनाई महसूस नहीं होती। यही कारण है कि उनके उपन्यासों की भाषा में संप्रेषणीयता बहुत अधिक है। उदाहरणार्थ –

''विशेषाधिकार अपात्रों को भी राज्य पद के लिए आकर्षित करते हैं, हमने विशेषाधिकारों की विषवेल पनपने नहीं दी है।''[1] इस प्रकार की भाषा में न कोई जटिलता है और न ही कठिन शब्दावली। यह सीधे पाठक के मन पर प्रभाव डालती है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

बोलचाल की भाषा का प्रयोग–

राजीव शर्मा ने अपने उपन्यासों में बोलचाल की भाषा का व्यापक उपयोग किया है। उनके संवाद सामान्य जीवन की भाषा के बहुत निकट होते हैं। पात्र जिस सामाजिक वर्ग या क्षेत्र से संबंधित होता है, उसकी भाषा भी उसी के अनुरूप होती है। यदि उनका पात्र ग्रामीण परिवेश से है तो उसकी भाषा में ग्रामीण शब्दावली और मुहावरे दिखाई देते हैं। वहीं शिक्षित या शहरी पात्रों की भाषा अपेक्षाकृत परिष्कृत होती है। इस प्रकार उनकी भाषा पात्रों के चरित्र को उभारने का कार्य करती है। संवादों में स्वाभाविकता होने के कारण पाठक को लगता है कि वह वास्तविक जीवन की बातचीत सुन रहा है। जैसे–

"जब लक्ष्य स्वार्थ नहीं परमार्थ हो,
तब क्षुद्रता उभरने में संकोच करती है।"[2]

यथार्थपरक भाषा

राजीव शर्मा के उपन्यासों में भाषा का एक महत्वपूर्ण गुण यथार्थवाद है। वे समाज के वास्तविक जीवन को प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं और उसी के अनुसार भाषा का चयन करते हैं। उनकी भाषा में कृत्रिमता या बनावटीपन नहीं होता। वे समाज की समस्याओं, संघर्षों और मानवीय भावनाओं को उसी रूप में प्रस्तुत करते हैं जैसे वे वास्तविक जीवन में दिखाई देते हैं। इस यथार्थपरकता के कारण उनके उपन्यास सामाजिक दस्तावेज की तरह प्रतीत होते हैं। पाठक को लगता है कि लेखक ने समाज के जीवन को बहुत निकट से देखा और समझा है।

भावात्मकता और संवेदनशीलता–

राजीव शर्मा के उपन्यासों की भाषा में भावात्मकता भी अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है। वे केवल घटनाओं का वर्णन नहीं करते बल्कि पात्रों की भावनाओं और मनोस्थितियों को भी गहराई से व्यक्त करते हैं। जब वे किसी पात्र की पीड़ा, प्रेम, संघर्ष या आशा का वर्णन करते हैं तो भाषा अत्यंत संवेदनशील हो जाती है। इस भावात्मकता के कारण पाठक पात्रों के साथ आत्मीय संबंध महसूस करने लगता है। उदाहरण के लिए –

"सत्ता यदि संसाधनों को राज्य के कल्याण में लगाए, अपने विलास–उपभोग में नहीं तो राजकाज एक कश्टप्रद दायित्व है, राजा प्रजा के धन से पोषित होता है, अतः वह प्रतिपल प्रजा का भृत्य है स्वामी नहीं।"[3] यहाँ भाषा पाठक को भावनात्मक रूप से जोड़ देती है। इस प्रकार उनकी भाषा में करुणा, सहानुभूति और मानवीय संवेदना की झलक स्पष्ट दिखाई देती है।

मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग–

राजीव शर्मा की भाषा की एक विशेषता यह भी है कि वे मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रभावी उपयोग करते हैं। मुहावरे भाषा को अधिक सजीव और प्रभावशाली बनाते हैं। उदाहरण के रूप में वे ऐसे मुहावरों का प्रयोग करते हैं जो लोकजीवन से जुड़े होते हैं। इससे उनकी भाषा में लोकसंस्कृति की झलक दिखाई देती है। साथ ही मुहावरों के प्रयोग से कथानक में रोचकता भी बढ़ जाती है और पाठक को भाषा अधिक जीवंत लगती है।

चित्रात्मकता–

राजीव शर्मा के वर्णन में चित्रात्मकता भी महत्वपूर्ण है। वे प्रकृति, परिवेश और परिस्थितियों का वर्णन इस प्रकार करते हैं कि पाठक के सामने पूरा दृश्य उपस्थित हो जाता है। उनकी भाषा में शब्दों का चयन ऐसा होता है कि पाठक कल्पना के माध्यम से उस दृ श्य को स्पष्ट रूप से देख सकता है। उदाहरण के लिए किसी गाँव के वातावरण, नदी, खेत या बाजार का वर्णन करते समय उनकी भाषा अत्यंत चित्रात्मक हो जाती है। इस चित्रात्मकता से उनके उपन्यासों का सौंदर्य बढ़ गया है। उदाहरणार्थ –

"हिमालय सुरम्य है तो अगम्य भी। फूलों की घाटियॉं, वानस्पतिक औषधियाँ, बहुमूल्य खनिज, गगनस्पर्शी देवदार, भोज, चीड़ वृक्षों के अछूते वनों का दुर्लभ एकांत। अनगिनत झरने, जो झरते–झरते थकते हैं तो सुस्ताने के लिए जम जाते हैं।"[4]

इस प्रकार का वर्णन पाठक को दृश्य की कल्पना करने में मदद करता है।

सांस्कृतिक और सामाजिक शब्दावली–

राजीव शर्मा के उपन्यासों की भाषा में भारतीय समाज और संस्कृति से जुड़े शब्दों का भी व्यापक उपयोग मिलता है। वे सामाजिक परंपराओं, रीति–रिवाजों और सांस्कृतिक मूल्यों को भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। उनकी भाषा में धार्मिक, सांस्कृतिक और पारंपरिक शब्दों का प्रयोग भी दिखाई देता है, जिससे पाठक को भारतीय जीवन–शैली का अनुभव होता है। यह विशेषता उनके उपन्यासों को सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बनाती है।

व्यंग्यात्मकता–

कुछ स्थानों पर राजीव शर्मा की भाषा में हल्का व्यंग्य भी दिखाई देता है। वे समाज की विसंगतियों और विरोधाभासों को उजागर करने के लिए व्यंग्य का प्रयोग करते हैं। यह व्यंग्य तीखा नहीं बल्कि सहज और प्रभावी होता है। इसके माध्यम से लेखक सामाजिक समस्याओं पर पाठकों का ध्यान आकर्षित करता है। जैसे –

"आत्महीनता और उपेक्षा के गहन गिरि–कानन में छिपे हुए भव्य प्रासादों के धूल–धूसरित अवशेषों में आपका स्वागत है।"[5]

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

साहित्यिक और लोकभाषा का संतुलन–

राजीव शर्मा की भाषा में साहित्यिक हिंदी और लोकभाषा का संतुलित प्रयोग मिलता है। वे आवश्यकता के अनुसार दोनों प्रकार की भाषा का उपयोग करते हैं। इस संतुलन के कारण उनकी भाषा न तो अत्यधिक साहित्यिक और कठिन बनती है और न ही अत्यधिक साधारण। इससे उपन्यास की भाषा में विविधता और लय बनी रहती है।

कथात्मक प्रवाह–

उनके उपन्यासों की भाषा में कथात्मक प्रवाह बहुत अच्छा होता है। वाक्य विन्यास सरल और सुगठित होता है, जिससे कहानी बिना किसी रुकावट के आगे बढ़ती रहती है। लेखक घटनाओं को इस प्रकार जोड़ता है कि पाठक की रुचि लगातार बनी रहती है। भाषा की यह प्रवाहशीलता उपन्यास की प्रभावशीलता को बढ़ाती है।

मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति–

राजीव शर्मा पात्रों के मनोविज्ञान को व्यक्त करने में भी भाषा का प्रभावी उपयोग करते हैं। वे पात्रों के आंतरिक संघर्ष, विचार और भावनाओं को शब्दों के माध्यम से स्पष्ट करते हैं। इस प्रकार उनकी भाषा केवल बाहरी घटनाओं का वर्णन नहीं करती बल्कि पात्रों के मन की गहराइयों तक पहुँचती है –

''अहंकारी और अत्याचारी शासकों के विरुद्ध उमड़–घुमड़ रहे जनाक्रोश के बादल अब बरसने को तैयार थे।''[6]

अंततः कहा जा सकता है कि राजीव शर्मा के उपन्यासों की भाषा अत्यंत प्रभावशाली, सरल और जीवन्त है। उनकी भाषा में सहजता, यथार्थपरकता, संवादधर्मिता, भावात्मकता और चित्रात्मकता का सुंदर समन्वय मिलता है। वे भाषा के माध्यम से न केवल कहानी कहते हैं बल्कि समाज, संस्कृति और मानवीय जीवन की जटिलताओं को भी उजागर करते हैं। उनके उपन्यासों की भाषा पाठकों को आकर्षित करती है और उन्हें कथा–जगत में पूरी तरह डुबो देती है। इस प्रकार राजीव शर्मा की भाषा हिंदी उपन्यास साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है और उनकी रचनात्मकता का प्रमुख आधार भी है।

राजीव शर्मा उपन्यासकार होने के साथ साथ कवि भी हैं। उनके तीन काव्य–संग्रह प्रकाषित हो चुके हैं, जिनकी भाषा पर चर्चा करना भी आवष्यक है। वस्तुतः किसी भी कवि की काव्यात्मकता का मुख्य आधार उसकी भाषा होती है। भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा कवि अपनी संवेदनाओं, भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करता है। समकालीन हिंदी साहित्य में राजीव शर्मा के काव्य–संग्रहों की भाषा विशेष रूप से सरल, संवेदनशील और प्रभावशाली मानी जाती है। उनकी कविता की भाषा में जीवन के यथार्थ, मानवीय भावनाओं और सामाजिक अनुभवों की स्पष्ट अभिव्यक्ति मिलती है। उनकी काव्य भाषा में साहित्यिकता और सहजता का सुंदर संतुलन दिखाई देता है। वे कठिन शब्दों और जटिल संरचनाओं से बचते हैं और ऐसी भाषा का प्रयोग करते हैं जो पाठकों के मन तक सीधे पहुँच सके।

उनकी कविताओं की भाषा सरल और सहज है। वे अत्यधिक अलंकारिक या क्लिष्ट शब्दावली का प्रयोग नहीं करते। उनकी भाषा सामान्य पाठकों के लिए भी आसानी से समझ में आने वाली होती है। उदाहरण के लिए –

''वर्षों बाद बचपन
के घर में लौटकर आना
लगता है
लौटना बचपन में।''[7]

इस प्रकार की भाषा सीधे भाव व्यक्त करती है और पाठक को तुरंत प्रभावित करती है।

उनकी कविताओं की भाषा अत्यंत भावात्मक होती है। वे मानव जीवन की खुशियों, दुखों, संघर्षों और आशाओं को संवेदनशील ढंग से व्यक्त करते हैं। साथ ही उनकी काव्यभाषा में चित्रात्मकता भी महत्वपूर्ण है। वे प्रकृति और वातावरण का इस प्रकार वर्णन करते हैं कि पाठक के सामने पूरा दृश्य उभर आता है –

''गहन वन के
अछूते एकांत में,
झुरमुटों से बरसती
स्वार्णिम किरण
प्रेमपत्र है।''[8]

यह वर्णन कविता को दृश्यात्मक बना देता है।

उनकी कविताओं में प्रतीकों का प्रयोग भी मिलता है। वे प्रकृति, प्रकाश, अंधकार, नदी, आकाश आदि को जीवन के प्रतीकों के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में मुहावरों और लोकभाषा के शब्दों का प्रयोग भी किया हैं, जिससे उनकी कविता में लोकजीवन की झलक दिखाई देती है। उदाहरण के लिए –

''जंगल काट रहे हैं
मायावी भद्रजन
चर्चारत हैं

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

पर्यावरणविद् ।''[9]

किसी भी कविता की भाषा में लय और संगीतात्मकता भी आवश्यक होती है। राजीव शर्मा की भाषा का एक महत्वपूर्ण गुण उसका प्रवाह है। उनकी कविताएँ पढ़ते समय ऐसा लगता है मानो शब्दों की एक मधुर धारा बह रही हो। उनकी भाषा में अनावश्यक जटिलता नहीं होती और वाक्य विन्यास अत्यंत स्वाभाविक होता है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा राजीव, अद्भुत संन्यासी, प्रभात प्रकाषन नई दिल्ली संस्करण 2021, पृ. 32
2. शर्मा राजीव, अद्भुत संन्यासी, प्रभात प्रकाषन नई दिल्ली संस्करण 2021, पृ. 32
3. शर्मा राजीव, अद्भुत संन्यासी, प्रभात प्रकाषन नई दिल्ली संस्करण 2021, पृ. 32
4. शर्मा राजीव, अद्भुत संन्यासी, प्रभात प्रकाषन नई दिल्ली संस्करण 2021, पृ. 77
5. शर्मा राजीव, अद्भुत संन्यासी, प्रभात प्रकाषन नई दिल्ली संस्करण 2021, पृ. 17
6. शर्मा राजीव, अद्भुत संन्यासी, प्रभात प्रकाषन नई दिल्ली संस्करण 2021, पृ. 132
7. शर्मा राजीव, उम्र की इक्कीस गलियॉ, आस्था प्रकाषन भोपाल संस्करण 2000, पृ. 20
8. शर्मा राजीव, उम्र की इक्कीस गलियॉ, आस्था प्रकाषन भोपाल संस्करण 2000, पृ. 25
9. शर्मा राजीव, उम्र की इक्कीस गलियॉ, आस्था प्रकाषन भोपाल संस्करण 2000, पृ. 48